गाने वाली टोकरी

किट पियरसन

गाने वाली टोकरी

बहुत समय पहले पुराने क्यूबैक में एक युवा दंपति रहता था. पति का नाम जेक्स और पत्नी का नाम फिनैट था. गर्मी के दिनों में वह दोनों बगीचे में पौधे लगाने, गायों और सूअरों की देखभाल करने और अपने नये घर को सजाने में प्रसन्नता से व्यस्त रहे. लेकिन जब शीत ऋतु आई तो लकड़ियाँ काटने के लिए जेक्स जंगल में चला जाता और सारा दिन घर से बाहर रहता. फिनैट घर में अकेली रह जाती. रात में जेक्स के घर लौट आने तक सर्दी के यह अँधियारे दिन फिनैट को खाली-खाली से लगते.

एक दिन एक अतिथि फिनैट के घर आये. पेड़ों के बीच से अपनी चमकदार लाल रंग की स्लेज को तेज़ी से चलाते वह महाशय आये थे. इठलाते हुए वह घर के अंदर आये और फिनैट से खाने के लिए उन्होंने कुछ मांगा.

फिनैट को खाना बनाना पसंद था. उसने बड़ी थाली में ढेर सारा खाना परोसा-उसमें मटर का सूप, सूअर का मांस, उबली हुई पत्ता-गोभी, पिजन पाई और सेब का रस था.

“प्रिय, यह बहुत ही स्वादिष्ट भोजन था,” अपना चेहरा साफ़ करते हुए महाशय ने डकार मारी. “क्या मैं दुबारा यहाँ आ सकता हूँ?”

अपनी प्रशंसा सुन कर फिनैट फूली न समाई. “अवश्य आइये,” उसने उत्तर दिया.

शीघ्र ही महाशय हर दिन उसके घर आने लगे. वह इतना खाना खा जाते थे कि अकसर जेक्स को रात के खाने में सिर्फ ब्रेड और पनीर ही मिलता था. जब फिनैट ने उसे बताया कि कौन उनका भोजन खा गया था तो जेक्स ने फिनैट से कहा कि वह महाशय को उनके घर आने से मना कर दे.

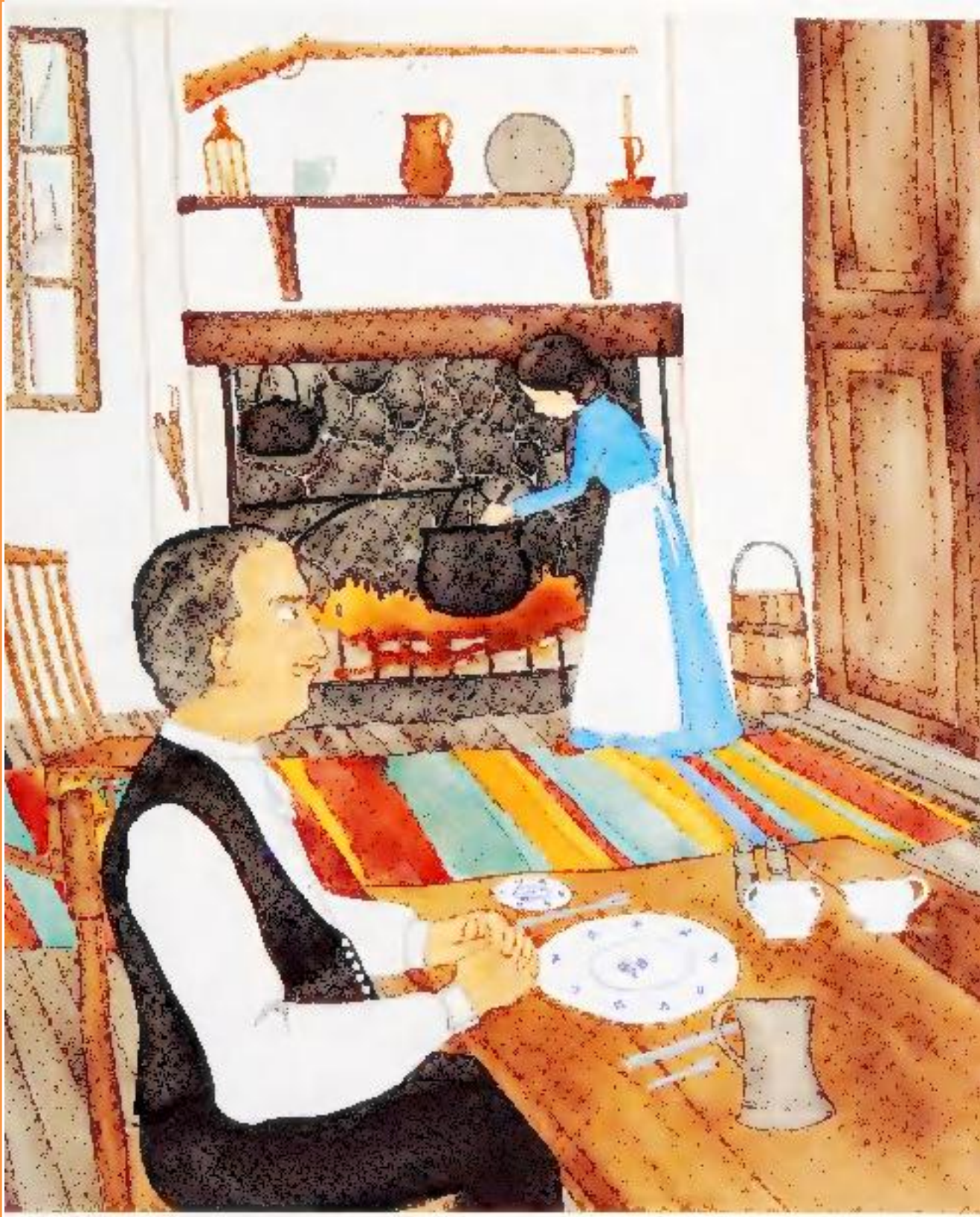

“मेरे पति चाहते हैं कि आप हमारे घर आना बंद कर दें,” अगले दिन फिनैट ने महाशय से कहा.

“लेकिन तुम्हारे स्वादिष्ट व्यंजनों की मुझे बहुत याद आएगी,” उन्होंने शिकायत की. “और तुम्हारी याद भी,” उन्होंने आगे कहा. “अगर मैं यहाँ आता रहूँ तो? उसे कैसे पता चलेगा?”

“मुझे डर है कि कभी वह दिन में लौट आयेगा और आपको यहाँ पायेगा,” फिनैट ने दुःखी मन से कहा. वह भी चाहती थी कि महाशय उसके घर आना बंद न करें.

महाशय ने सेब का रस पिया और डकार मारा. “मेरी बात ध्यान से सुनो. मैं तुम्हें ऐसा रास्ता बता सकता हूँ कि तुम्हारे पति के जाने बिना मैं आगे भी यहाँ आ सकता हूँ.”

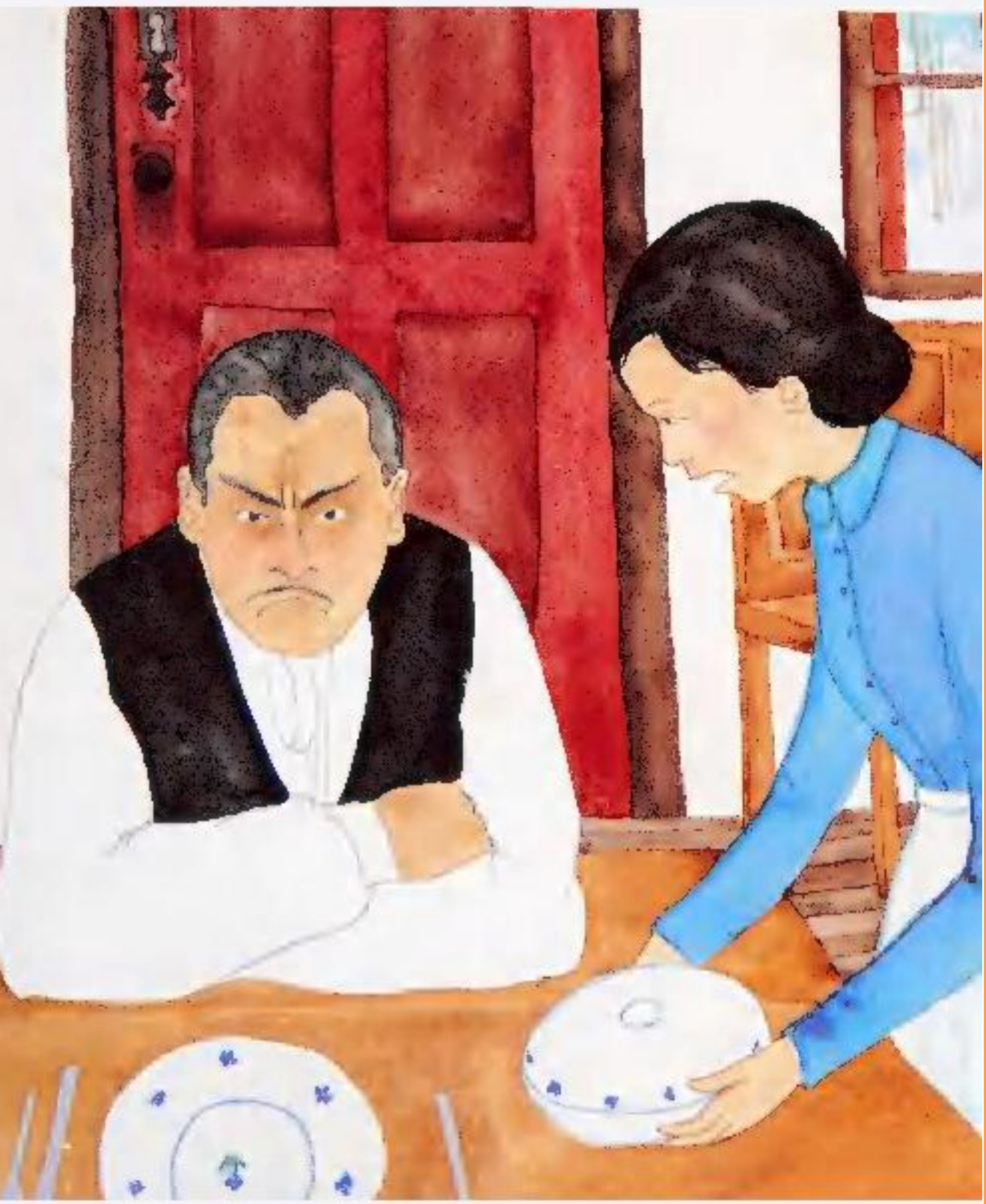

जेक्स उस रात जब जंगल से घर वापस आया तो उसने देखा कि चूल्हे की आग बुझ चुकी थी, गाय का दूध निकाला न गया था और उसकी पत्नी, बिस्तर में लेटी, दर्द से करहा रही थी.

“ओह प्रिय फिनैट, क्या बात है?” उसने चिल्ला कर पूछा.

“ओह मेरा दाँत, मेरा दाँत! उसमें बहुत तेज़ दर्द हो रहा है!”

“क्या मैं डॉक्टर को बुला लाऊँ?”

“कोई डॉक्टर मेरी सहायता नहीं कर सकता. अच्छी फ्रेंच वाइन का एक बड़ा घूँट ही मेरे दाँत दर्द का एक मात्र इलाज है.”

“फ्रेंच वाइन! लेकिन वाइन लाने के लिए मुझे नगर जाना पड़ेगा. इस यात्रा में दो दिन लग जायेंगे और तब तक तुम्हारे दाँत का दर्द और बढ़ जाएगा. क्या कुछ और नहीं है जो तुम्हारा दर्द ठीक कर सके?”

“सिर्फ वाइन ही ठीक कर सकती है,” फिनैट ने कराहते हुए कहा. “हर कोई जानता है कि यही उत्तम इलाज है.” इतना कह कर वह रोने लगी.

“चुप हो जाओ. अगर तुम्हें वाइन ही चाहिए तो मैं निश्चय ही तुम्हारे लिए वाइन लेकर आऊँगा. मैं अभी नगर की ओर चल पड़ूँ तो परसों सुबह तक वापस लौट आऊँगा.”

जेक्स ने अपने स्नोशूस पहने और घर से चल दिया. सारी रात और अगले दिन के अधिकांश समय वह चलता रहा. वह रास्ते पर धीरे-धीरे आगे जा रहा था कि उसे एक वृद्ध फेरीवाला दिखाई दिया-यह वही फेरीवाला था जिसने पिछले वर्ष एक पतीला उन्हें बेचा था.

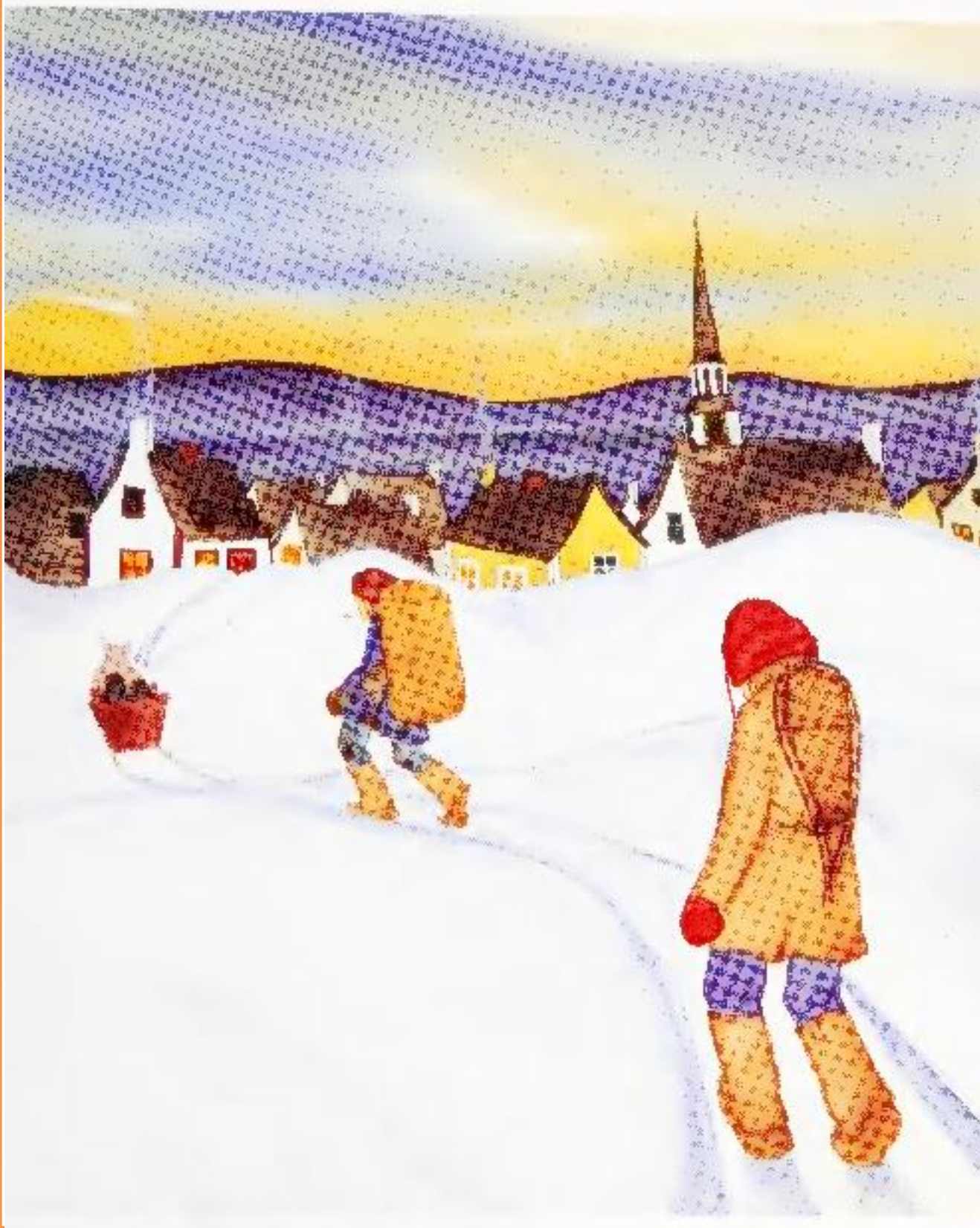

“हेलो, मेरे युवा मित्र,” फेरीवाले ने कहा. “तुम घर से इतनी दूर यहाँ क्या कर रहे हो?”

“मेरी बेचारी बीवी, फिनैट, को दाँत में भयंकर दर्द हो रहा है,” जेक्स ने कहा. “उसके लिए वाइन लाने मैं नगर जा रहा हूँ.”

“दाँत दर्द के लिए वाइन? मैंने तो यह बात कभी नहीं सुनी.”

“उसका कहना है कि इस दर्द का यही एक मात्र इलाज है. और सबसे बढ़िया वाइन ही चाहिए. इसमें तो मेरे बहुत पैसे खर्च हो जायेंगे.”

“हम्म्म.....” फेरीवाले ने कहा. “मैं तुम से एक बात कहना चाहता हूँ. मुझे नहीं लगता कि तुम्हारी पत्नी को मुझ से अधिक दाँत का दर्द है.”

“फिनैट इतनी कपटी नहीं है कि बिना कारण मुझे नगर की ओर भेज दे,” जेक्स ने फेरीवाले की बात का विरोध किया.

“हम देखेंगे. मेरे पास थोड़ी फ्रेंच वाइन है. तुम बहुत थके हुए लग रहे हो. मेरी टोकरी में बैठ जाओ. मैं तुम्हें उठा कर घर ले जाऊँगा.”

जेक्स फेरीवाले की टोकरी में बैठा सो गया. उस आदमी को घर जाने का एक छोटा रास्ता पता था. वह उसी रात जेक्स के घर पहुँच गये.

ठक, ठक, फेरीवाले ने दरवाज़ा खटखटाया. फिनैट ने दरवाज़ा खोला. वह अप्रसन्न दिखाई दे रही थी.

“ओह, यह तुम हो. रात में इस समय तुम्हें क्या चाहिए?”

“मुझे रात बिताने के लिए थोड़ी जगह चाहिए. मैं लंबी यात्रा करके आया हूँ और मेरे पाँव बहुत थके हुए हैं. और मेरे टोकरी में कुछ है जो शायद आप को पसंद आये.”

“ठीक है,” फिनैट ने आह भरी. “तुम भीतर आकर आराम कर लो. लेकिन तुम्हारी टोकरी का सामान देखने के लिए मेरे पास अभी समय नहीं है. मैं रात का खाना परोस रही हूँ.”

महाशय खाने की मेज़ पर बैठे थे और मग से मेज़ पर धीरे-धीरे टक-टक कर रहे थे. “तुम हमारे साथ खाना क्यों नहीं खाते? बहुत व्यंजन बने हुए हैं और मैं तुम्हें बता सकता हूँ कि यह सब बहुत स्वादिष्ट हैं. और सेब का रस भी है. और इस बात की चिंता न करना कि यह रस खत्म हो जाएगा. मुझे पता है कि कल कुछ फ्रेंच वाइन आ रही है.”

“हाँ, आओ हमारे साथ भोजन करो,” फिनैट ने कहा. वह अब फिर से प्रसन्नचित हो गई थी.

“मैं इंकार नहीं कर सकता, मैडम. मुझे कुछ खाए हुए बहुत समय बीत गया है. लेकिन मुझे अपनी यह टोकरी अपने निकट ही रखनी होगी.”

फिनैट हँस पड़ी. “तुम्हारी टोकरी! इसमें अवश्य ही कोई बहुमूल्य वस्तु होगी!”

फेरीवाले ने बड़ी सावधानी के साथ टोकरी पीठ से उत्तर कर रख दी और मेज़ पर बैठ गया.

भूने हुए तीतर और धूमित मछली और सूअर का मांस और शलजम की दावत करने के बाद महाशय ने फिनैट से कहा, “अब, प्रिय, एक गीत सुनाओ.”

“ओह, नहीं! पहले आप गीत गायें,” फिनैट ने हठ किया.

महाशय अपनी कर्कश आवाज़ में गाने लगे:

“जेक्स गया है वाइन लेने

कितना भोला है बेचारा!

फिनैट के भूने तीतर हैं मजेदार

ओह, मज़ा आ गया रा..रा..रा!”

“कितना सुंदर गाया आपने!” फिनैट ने कहा.

“अब तुम्हारी बारी है,” महाशय ने उससे कहा.

“फेरीवाले से कहो,” फिनैट ने उत्तर दिया. “वह शायद मुझ से अच्छा गायक है.”

“मेरे विचार में गृहलक्ष्मी को ही पहले गाना चाहिए,” फेरीवाले ने कहा.

फिनैट गाने लगी:

“मेरा पति नहीं जानता आप आये हैं घर पर मेरे
उसको लगता दर्द बहुत है एक दाँत में मेरे
खुशियों भरी यह रात है आज हमारे पास
सुबह से पहले उसके आने की नहीं कोई आस.”

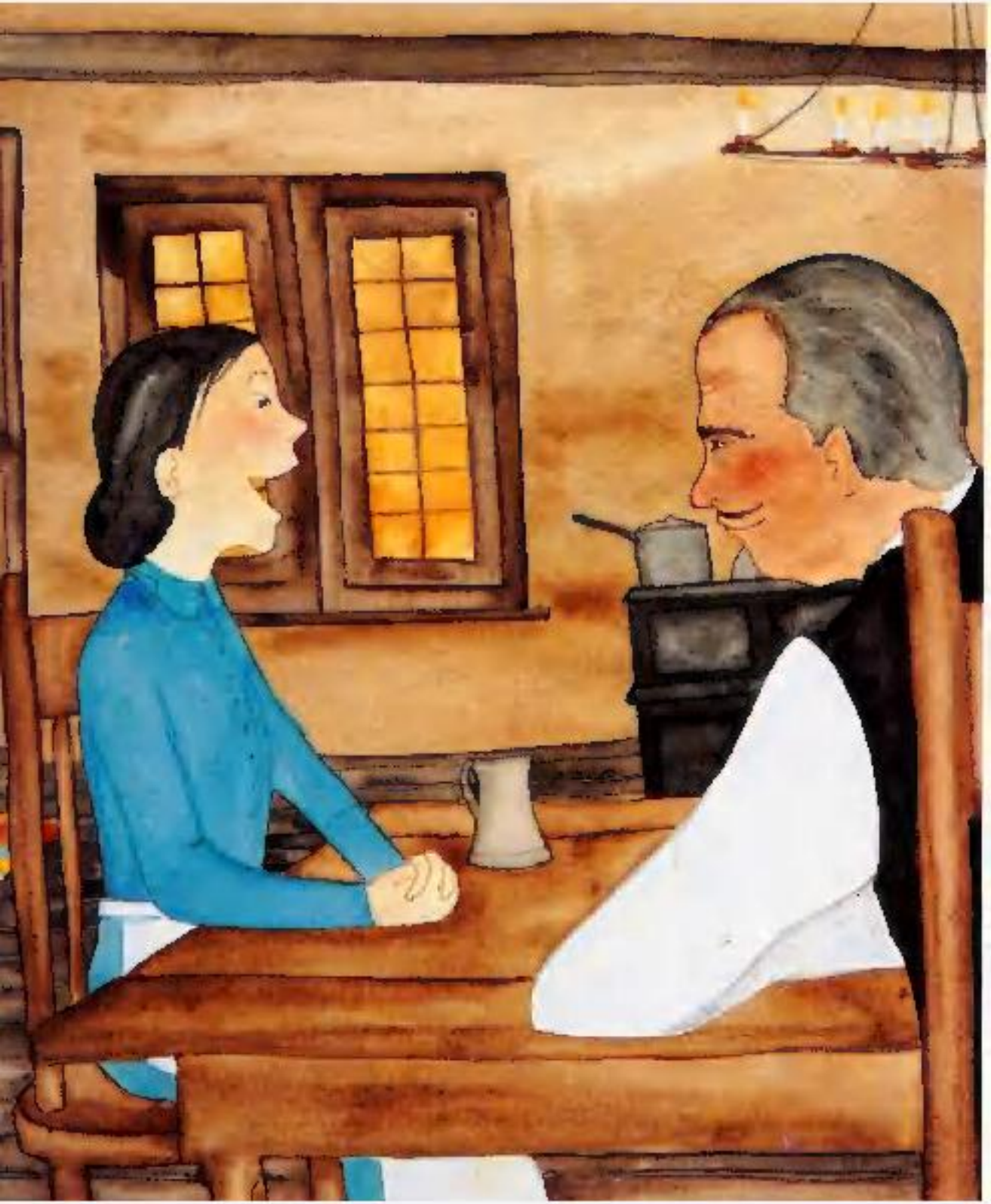

“बहुत सुंदर, निस्संदेह!” महाशय ने चिल्ला कर कहा. “अब तुम्हारी बारी है,” उन्होंने फेरीवाले से कहा.

“बहुत अच्छा,” और फेरीवाले ने यह गीत गाया:

“गीत आपके हैं सब सुंदर

पर अभी आप हो जायेंगे हैरान

मेरी टोकरी जब गायेगी इक गीत

तुम सब हो जाओगे परेशान.”

“तुम यह कह रहे हो कि तुम्हारी टोकरी भी गा सकती है!” महाशय ज़ोर से हँसे. लेकिन अचानक फिनैट खामोश हो गई.

और इसके पहले कि कोई कुछ कहता, टोकरी गाने लगी:

“फिनैट, मुझको लगता दर्द हो गया है तुम्हारा ठीक
लेकिन तुम ने ऐसा छल क्यों किया था मुझ से
महाशय अभी यहाँ से निकल जाएँ आप
मुझे देखते ही भाग उठेंगे मेरे घर से.”

फिर जेक्स टोकरी से कूद कर बाहर आया. महाशय उनके घर से निकल भागे और फिर कभी दुबारा उनके घर न आये. फेरीवाले ने स्वादिष्ट भोजन के लिए फिनैट को धन्यवाद कहा और आग के पास लेट कर गहरी नींद सो गया.

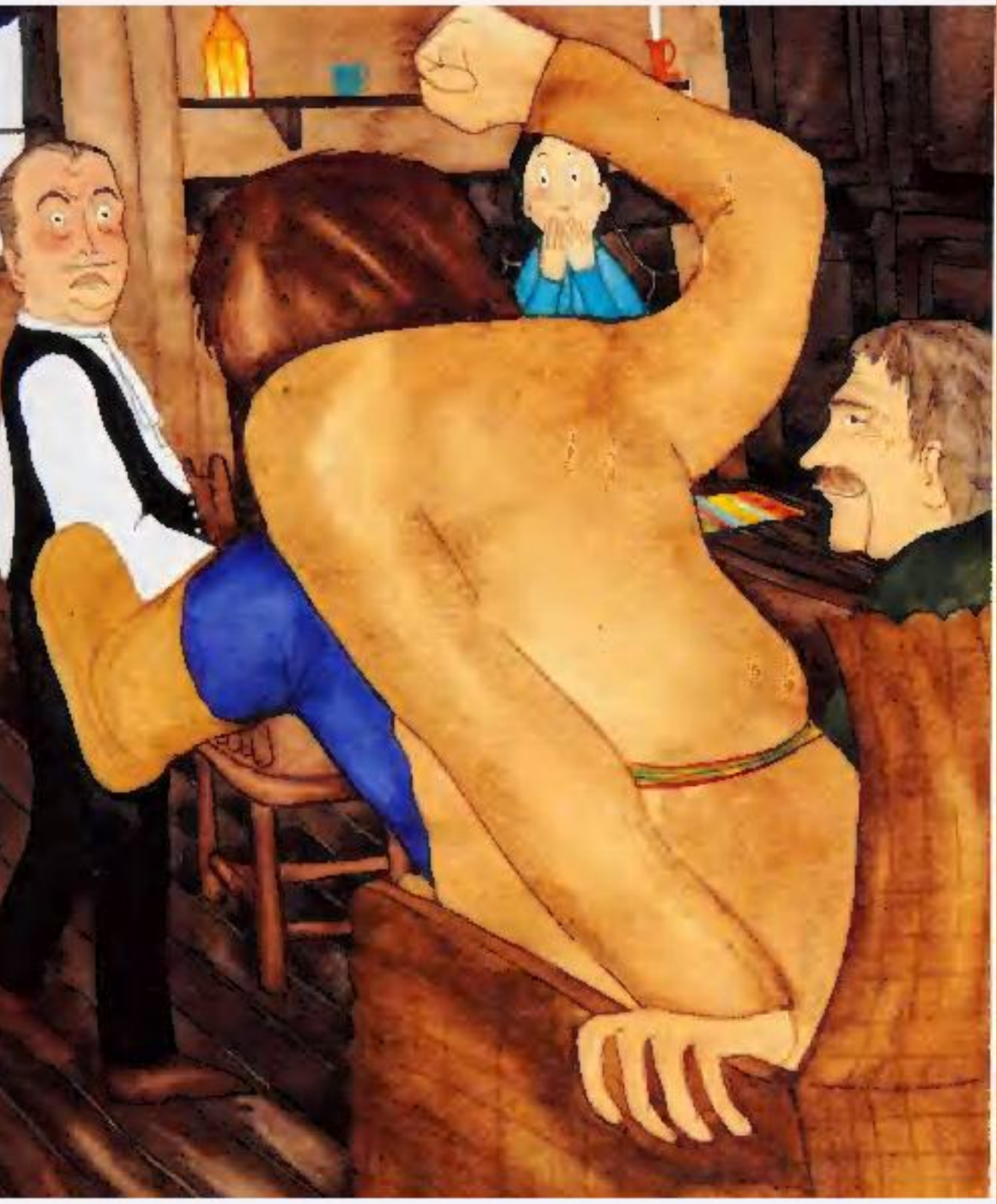

जेक्स और फिनैट ने देर तक आपस में बातें कीं. उस दिन के बाद से दोनों ने एक दूसरे का पूरा ध्यान रखा और अपना शेष जीवन प्रसन्नता और सुख से बिताया.

समाप्त